ब्रह्मपुर-शांतिकुंड। उड़ीसा लेखिका संघ द्वारा आयोजित महासम्मेलन में मुख्य वक्ता ब्र.कु. माला 'लेखिका का आध्यात्मिक उत्थान में योगदान, विषय पर विचार व्यक्त करते हुए। मंचासीन हैं समुला, शैलेन्द्री तथा अन्य।

छिबरामऊ। नगर पालिका परिषद के जे.ई. प्रेमपाल जी एवं ब्र.कु. शिवानी ब्रह्मा बाबा के स्मृति दिवस पर माल्यार्पण करते हुए।

डाकपत्थर। एस.डी.एम अशोक पाण्डे जी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. सविता।

घरान-नेपाल। 1008 जगतगुरू मोहन वरण देवाचार्य महाराज को फल वितरण करते हुए ब्र.कु. नानी मैया तथा अन्य।

जगराओं शहर-पंजाब। 'हीलिंग थ्रू माइंड' विषय पर आयोजित सेमिनार में मंचासीन हैं ब्र.कु. चन्द्रशेखर, ब्र.कु. सीमा, ब्र.कु. अमर ज्योति, सुखविन्द्र सिंह जी, ब्र.कु. अशोक, जगदीश प्रसाद।

डोंबिवली-मुम्बई। 'स्वास्थ्य आपकी मुट्ठी में' प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. शकू, रीगेन्सी कॉम्पलेक्स साईं मन्दिर के ट्रस्टी श्री निवासन, समाजसेवक तुलसीराम व गाँवदेवी स्कूल ट्रस्टी केशव।

झलक दिव्य सौंदर्य की

संसार में जो महत्व सुंदरता को प्राप्त है वह किसी और गुण को प्राप्त नहीं है। इसीलिए जो महत्व आंखों को प्राप्त है वह किसी और अंग को प्राप्त नहीं है। आंखों के बारे में ही कहा गया है-''बाबा, आंखे बड़ी नियामत है।'' यदि आंखें अथवा सौंदर्य को देखने की शक्ति अप्राप्त हो तो मानव-जीवन ही नीरस एवं फीका हो जाता है।

मनुष्य किसी भी वस्तु अथवा व्यक्ति की ओर सबसे पहले उसके रुप के आकर्षण में ही खिंचता है। बाजार से चंद पैसों की चीज भी खरीदनी हो तो ग्राहक उसके रंग-रुप के आधार पर ही उसकी ओर बढ़ता है। कभी न थकने वाली दृष्टि एक से दूसरे और दूसरे से तीसरे दृश्य पर भटकती ही रहती है। कभी वह सुंदर चेहरों को देखती है, तो कभी चमकीले-भड़कीले वस्त्रों को। कभी फूलों की सुंदरता को निहारने लगती है तो कभी रंग-बिरंगे नजारों को। इसी सुंदरता की प्राप्ति के लिए मनुष्य करोड़ों रुपये की संपत्ति को पानी की तरह बहा रहा है। लिपिस्टिक, पावडर, सूर्खी और न जाने कितने ही प्रकार के श्रृंगार प्रसाधन आये दिन बनते रहते हैं परंतु फिर भी सौंदर्य नाम की चिड़िया मनुष्य की आंखों से ओझल ही होती जा रही है। हर चेहरा चंद घड़ियों के लिये बनावटी श्रृंगार से चमकने लगता है और उसी पर मुंह धोने के बाद फिर से हसरत बरसने लगती है। सुंदरता के आकर्षण में न जाने कितने घराने बरबाद हो गए हैं। आज की सुंदरता कल को कचहरी के कटघरे में खड़ी तलाक ले रही होती है। यह कैसी सुंदरता है जो क्षण भर में उभरती है और क्षण भर में मिट जाती है। यह कौन-सा छलावा है जो जिसको प्रिय होता है उसी को अप्रिय हो जाता है। और वह कौन सा सौंदर्य है जिसको प्राप्त करने के लिए हर व्यक्ति भटक रहा है। आइये, जरा हम इन सवालों पर विचार करें।

सुंदर फूल को देखकर हम उसे तोड़ लेते हैं, परंतु यदि उसमें से छोटे-छोटे कीड़े हमारे हाथ पर रेंगने लगे तो हम उसे तुरंत फेंक देते है। सुंदर वस्तु को देखकर हम खरीद तो लेते हैं, परंतु यदि उसकी पायेदारी और उपयोगिता में कमी दिख जाये तो उसे लौटाने का यत्न भी करने लगते है।

मनुष्य स्वाभाविक ही उस वस्तु की ओर लपकता है जो उसे सुख देती है। यदि सुंदरता के गुण में सुखदायक शक्ति न समाई होती तो मनुष्य कभी भी इसकी ओर न खिंचता। परंतु जैसा कि हर व्यक्ति का अनुभव है, सुंदरता अवश्य ही सुख देती है, भले ही वह सुख अल्पकाल का ही क्यों न हो। जिस सुंदरता का हम पहले जिक्र कर आये हैं वह ऐसी सुंदरता है जो सुख तो अवश्य देती है परंतु साथ-साथ दु:ख भी देने लगती है। जब तक सुख की मात्रा दु:ख की मात्रा से अधिक रहती है तब तक तो मनुष्य उसको पसंद करता रहता है और जब उसके दु:ख की मात्रा सुख की मात्रा से अधिक होने लगती है तो वह उसे त्याग देता है। सुंदर फूल को देखकर हम उसे तोड़ लेते हैं, परंतु यदि उसमें से छोटे-छोटे कीड़े हमारे हाथ पर रेंगने लगे तो हम उसे तुरंत फेंक देते है। सुंदर वस्तु को देखकर हम खरीद तो लेते हैं, परंतु यदि उसकी पायेदारी और उपयोगिता में कमी दिख जाये तो उसे लौटाने का यत्न भी करने लगते है। सुंदर चेहरे का पुजारी सुंदरता के आकर्षण में फँसकर जीवन का सौदा कर लेता है, परंतु जब सुंदर मुखड़े के पीछे छुपे अवगुणों का अनुभव करता है तो उसी सुंदरता से छुटकारा पाने की सोचने लगता है।

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि वास्तव में सौंदर्य केवल बाहरी रुप का नाम नहीं है बाहरी रुप द्वारा भीतर के गुणों की झलक को ही सौंदर्य का नाम दिया जा सकता है। इसीलिये सुंदरता के शब्द का प्रयोग केवल स्थूल वस्तुओं के लिए ही नहीं होता बल्कि सूक्ष्म गुणों के लिए भी होता है। जहां सुंदर मुखड़े की आवश्यकता है वहां सुंदर स्वभाव और सुंदर सलीके अथवा ढ़ंग की भी जरुरत है। मिसाल के तौर पर यदि किसी सुंदर स्त्री के स्वभाव में कड़वाहट और तीखपन है और काम-धंधा भी सलीके से नहीं करती तो उसे लोग केवल मिट्टी की मूरत ही कहेंगे। यदि किसी स्त्री का स्वभाव तो सुंदर हो परंतु काम-काज का लक्ष्ण न हो और सूरत भी ऐसी ही हो तो वह दूसरों की ओर तो भले ही झुकती रहेगी परंतु उसकी ओर बहुत कम लोग झुकेंगे। और यदि कोई सुंदर ढ़ंग से कार्य करने वाली स्त्री शक्ल व सूरत और अच्छे स्वभाव से वंचित रह गई तो वह अक्ल के अहंकार में दूसरों के लिए सिरदर्द बन जायेगी और दूसरे सदा ही उससे दूर रहने की सोचते रहेंगे।

इसी तरह यदि कोई व्यक्ति सुंदर भी है और स्वभाव का भी मीठा है परंतु काम-काज में सीधा है तो उसे अनाड़ी या बुद्धु ही कहेंगे। यदि कोई सुंदर और सलाकाशुआर व्यक्ति स्वभाव का अच्छा नहीं है तो लोग उसे घमंडी कहकर उसकी निंदा करेंगे और अगर स्वभाव का मीठा और काम-काज में प्रवीण व्यक्ति शक्लोसूरत से कुरुप होगा तो उसके व्यक्तित्व में जरुर कमी महसूस होती रहेगी। इसलिए जब तक सुंदर शरीर के अंदर सुंदर स्वभाव एवं सुंदर सलीके अथवा सुंदर ढंग से कार्य करने वाली आत्मा की झलक दिखाई नहीं देगी तब तक मनुष्य सौंदर्य के अभाव में भटकता ही रहेगा। अब प्रश्न उठता है कि क्या ऐसी संपूर्ण सुंदरता की प्राप्ति हो भी सकती है ? और, यदि हो सकती है तो कैसे ?

मनुष्य की यह भटक ही सिद्ध करती है कि किसी जमाने में वह सौंदर्य-संपन्न था। वह स्वयं भी सुंदर था और जिस वस्तु को देखता था वह भी उसे सुंदर दिखाई देती थी। इसी संस्कार के कारण और उसी अनुभव को फिर से प्राप्त करने के लिये उसकी आंखें सदा ही बैचेन रहती हैं। वह जमाना था सतयुगी स्वर्ग का अथवा बैकुण्ठ का जिसमें सर्वगुण संपन्न, सोलह कला संपूर्ण, संपूर्ण निर्विकारी, अति सुंदर एवं आकर्षक-मूर्त देवता श्री राधे-श्री कृष्ण अथवा श्री लक्ष्मी-नारायण राज्य करते थे और जिसमें हर तरफ आत्मिक एवं प्राकृतिक सौंदर्य ही दिखाई देता था। उसी दिव्य सौंदर्य की झलक के लिये मनुष्य-मात्र की आंखें व्याकुल हैं और उसी झलक को निहार लेने के बाद ही वह तृप्त हो पायेंगी। सौभाग्य की बात यह है कि आत्मिक एवं प्राकृतिक सौंदर्य के बीज-रुप निराकार परमात्मा शिव वर्तमान समय प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा अपना दिव्य और अलौकिक कार्य कर रहे हैं। जिसके फलस्वरुप शीघ्र ही सृष्टि पर फिर से बैकुण्ठ की स्थापना हो जायेगी जिसमें सौंदर्य ही सौंदर्य दृष्टिगोचर होगा। परंतु उस दिव्य सौंदर्य की झलक का साक्षात्कार केवल वहीं थोड़ी सी आत्माएं कर पायेंगी, जो अभी से अपने-आपको परमात्मा द्वारा दिये गये ज्ञान और योग के बल से दिव्य एवं सुंदर बना लेंगी।